# पेशेवर पहचान को खोजती एक शिक्षिका

सोनिका चौहान

शिक्षण एक कठिन काम है और यह बहुत मेहनत की मांग करता है। बहुत से शिक्षक इस बात से प्रेरित होकर इस पेशे में आते हैं कि वे छात्रों को प्रेरित करेंगे और उनकी क्षमता पहचानने में मदद करेंगे। कक्षाओं का अलग-अलग प्रकृति का होना तथा यह उम्मीद करना कि हर बच्चा सीख सकता है शिक्षण को चुनौतीपूर्ण बनाता है। विविधापूर्ण कक्षाएं अक्सर शिक्षक से यह मांग करती हैं कि वह परामर्शदाता, कथाकार, अभिनेता, लेखक, वक्ता आदि विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाए।

## आत्मावलोकन

प्राथमिक स्कूल में शिक्षण करना पिछले कई सालों से मेरे लिए सबसे ज्यादा फलदायक व संतुष्टि देने वाला अनुभव रहा है। मैंने अपने काम के हर पहलू का लुत्फ उठाया है। यह विभिन्न पहलू हैं- विषयवस्तु का चयन करना व उसे डिजाइन करना, नई व जटिल अवधारणाओं तथा सवालों के साथ छात्रों का जुड़ाव बनाने के लिए रुचिकर तरीके विकसित करना, चुप्पा किस्म के व रुचिहीन बच्चों को शिक्षण में शामिल करना तथा उन्हें फंतासी व हकीकत की दुनियाओं के बारे में एनीमेशन वाली कहानियां सुनाना।

पिछले कुछ सालों के दौरान मैंने स्कूली शिक्षा की दुनिया में ''सुधारों'' के रूप में होने वाले बदलावों को देखा है। हमें यह बताया गया कि ''प्रभावी पेशेवर'' शिक्षक बनने के लिए यह सुधार बेहद जरूरी हैं। पेशेवर बनने के इसी तरह के एक अनुभव से गुजरने के तुरंत बाद मुझे महसूस हुआ कि एक शिक्षक के रूप में, निर्णय लेने की मेरी भूमिका मात्र चीजों को लागू करने वाले व्यक्ति तक सीमित होकर रह गई है। शिक्षक के तौर पर हमसे बनी-बनाई पाठ योजना व गतिविधियों के आधार पर शिक्षण करवाने की उम्मीद की जा रही थी। इस बात ने मेरे भीतर शिक्षक के इस पेशे के प्रति एक तरह की अरुचि पैदा कर दी।

## शिक्षण का व्यवसायीकरण?

इन सुधारों को शिक्षण पद्धतियों को बेहतर बनाने व शिक्षण को ज्यादा पेशेवर गतिविधि के तौर पर विकसित करने के नाम पर स्कूलों में स्थापित किया जा रहा है। इन सुधारों के परिणास्वरूप अत्यधिक फीस वसूलने वाले कई निजी स्कूल छात्रों के कौशल व क्षमताएं बढ़ाने के बहाने शिक्षकों से यह उम्मीद रखते हैं कि वे पाठ्यचर्या संबंधित पूर्व नियोजित सामग्री का उपयोग करें। बने-बनाए पैकेज के रूप में पेश की गई इस सामग्री में स्कूली पाठ्यपुस्तकों की ज्यादातर अवधारणाओं के लिए बनी-बनाई पाठ योजनाएं मिल जाती हैं। यह सामग्री शिक्षकों को यह भी बताती है कि क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है। स्कूली प्रशासन बने-बनाए पैकेज के रूप में पेश की गई इस सामग्री को इस्तेमाल करने पर जोर देता है क्योंकि इससे उन्हें स्कूल की फीस बढ़ाने का मौका मिलता है। इस तरह की सामग्री को ''स्कूल के तकनीकी विकास'' के तौर पर देखा

जाता है और स्कूल प्रबंधन खास सामाजिक-आर्थिक वर्ग के बच्चों को अपनी सेवाएं मुहैया करवाकर इसे अपने व्यवसाय में बढ़ौतरी के तौर पर देखता है। शैक्षिक सुधारों के नाम पर होने वाले इन बदलावों को शिक्षा के क्षेत्र में नवउदारवादी विचारधारा के उदय के लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। शिक्षा व गुणवत्ता से जुड़े मुद्दों को पुनर्परिभाषित करते हुए इन्हें सीधे तौर पर पेशेवर गतिविधियों के साथ जोड़ा जा रहा है। इसका नतीजा यह निकलता है कि इस नवउदारवादी समय में शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को आर्थिक आधार पर परिभाषित किया जाता है। और सारा ध्यान छात्रों के सीखने व शिक्षक की जवाबदेही पर सतत नजर रखने पर केन्द्रित हो जाता है।

शिक्षक इन सुधारों के साधन बन गए हैं (बत्रा 2012); तथा अब उनके पेशेवर महत्व के बारे में उनके प्रयासों से मिलने वाले परिणामों की माप के आधार पर चर्चा की जाती है (कुमार 2011)। इस तरह की पहल में यह मान्यता मौजूद है कि छात्र की उपलब्धि को एक खास दिशा देने के लिए ध्यान पाठ्यचर्या पर नियंत्रण पर होना चाहिए। इसका आशय है कि छात्रों की उपलब्धियों को शिक्षण के बारे में दस्तावेजों में विस्तार पूर्वक वर्णन करके बढ़ाया जा सकता है। इसके परिणास्वरूप शिक्षक की भूमिका सोचने-समझने वाले पेशेवर मनुष्य के बजाए एक ऐसे तकनीशियन के रूप में तब्दील हो जाती है जो दी गई विषयवस्तु को लागू कर सकता है।

## शिक्षा का एकरूपीकरण

मैं लेख में इन सुधारों से पैदा हुई कुछ चिंताओं का वर्णन करूंगी। पहली है कि अब शिक्षकों से यह उम्मीद की जाती है कि वे पूर्व निर्धारित विषयवस्तु, पढ़ाने के तरीकों तथा पाठ्यचर्या से संबंधित दी गई सामग्री को बिना सोचे समझे इस्तेमाल करें। इससे छात्रों की जरूरत व परिस्थिति के हिसाब से बदलाव करने के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। इसने शिक्षक की स्वायत्तता का गला घोंट दिया है तथा जो शिक्षक काम करा रहा है उसकी पाठ्यचर्या व शिक्षण प्रक्रियाओं की योजना बनाने की भूमिका को गायब कर दिया है।

दूसरे, पाठ्यचर्या की विषयवस्तु व शिक्षण प्रक्रियाओं को एकरूप बनाने का यह प्रयास राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में शुरुआती स्तर पर सीखने में विविधता के महत्व को जिस तरह से स्थापित किया गया है उसके विपरीत है। आमतौर पर इस तरह से तैयार की गई सामग्री एक खास वर्ग की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाई जाती है। इसकी विषयवस्तु, प्रस्तुततिकरण व भाषा एक खास समूह की सामाजिक परिस्थिति को दर्शाते हैं। इस सामग्री का मकसद उस खास संस्कृति द्वारा सराहे जाने वाले मूल्यों व प्रवृत्तियों को मन में बिठाना होता है। वर्तमान में मौजूद विषमताओं पर चर्चा करने के लिए उसमें शायद ही कोई गुंजाइश होती है। इस तरह यह उन विषमताओं व पदानुक्रम को बनाए रखने का काम करती है जिसे छात्र अपने आस-पास देख रहे होते हैं।

तीसरे, बनी बनाई पाठ योजनाओं में छात्रों द्वारा सीखे हुए का आकलन करने के लिए बहुविकल्पात्मक प्रश्न शामिल होते हैं। ऐसे प्रश्न विषय में मौजूद सामग्री के साथ गहराई से जुड़ाव बनाने में बाधा पैदा करते हैं। इस तरह की आकलन पद्धतियां छात्रों के लिए आलोचनात्मक ढंग से विचार करने की गुंजाइश पैदा नहीं करतीं, बल्कि खोजबीन करने व अवधारणाओं का अलग-अलग परिस्थितियों में इस्तेमाल करने की संभावना को भी सीमित कर देती हैं।

आखिरी बात यह कि शिक्षण संबंधी मामलों पर इस तरह का नियंत्रण पक्के तौर पर शिक्षण का मानकीकरण करता है। इससे भी बढ़कर यह स्कूल को बाहर से नियंत्रित करने वाले लोगों तथा पाठ्यचर्या व छात्रों के साथ रोजाना काम करने वाले लोगों के बीच की खाई को और गहरा कर देता है जिसकी परिणति यह होती है कि स्कूल व शिक्षक के काम पर नौकरशाही हावी होती चली जाती है।

## कक्षा की मेरी सीख

शिक्षक के तौर पर मेरे अनुभव यह बताते हैं कि शिक्षण, ''सुधारों'' की दिशा द्वारा सुझाई गई योजनाबद्ध गतिविधि की बजाए एक तरह की स्वतः स्फूर्त गतिविधि होती है। मेरे पास इस तरह के शायद ही कोई उदारहण होंगे

जब मैं विषयवस्तु व काम करने के तरीके की योजना बनाकर किसी पाठ का शिक्षण सफलता पूर्वक कर पाई हूं। शिक्षण कराते वक्त अक्सर मुझे अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करने के तुरंत व स्वतः स्फूर्त निर्णय उस वक्त लेने पड़े हैं जब लगा कि चीजें पाठ योजना के अनुसार ठीक नहीं चल रही हैं। किसी पाठ का शिक्षण ठीक नहीं होने से उपजी निराशा पर काबू पाने के लिए मुझे अपने शिक्षण में लगातार आशा व जीवंत्ता का मेल करना पड़ा है ताकि कक्षा में छात्रों की भागीदारी बनी रहे। मुझे अलग-अलग रुचियां व ज्ञान अपने साथ लेकर आए छात्रों के साथ काम करना पड़ा है। हर घंटे बदल जाने वाली उनकी भावनाओं की तीव्रता के साथ तालमेल बनाना पड़ा है। मैंने यह महसूस किया है कि शिक्षण के हर अनुभव के बाद छात्रों की भागीदारी बनाने के लिए मुझे पहले से तय विषयवस्तु में सुधार करना पड़ा है और इसने मेरी शिक्षण पद्धति को और समृद्ध किया है।

नए सुधारों संबंधी कार्यशालाओं में भागीदारी करने से पहले मैंने अपने ज्ञान व विशेषज्ञता के आधार पर अवधाराणाएं चुनने व उन्हें सिखाने की स्वतंत्रता का लुत्फ उठाया है। हम अकादमिक सत्र की शुरुआत में मुख्य अवधारणाएं चुनकर साल भर के लिए एक स्लेबस की योजना बना लेते थे। किसी अवधारणा को शुरू करने से पहले थीम को लेकर मैं विषयवस्तु व शिक्षण पद्धति के बारे में अपने साथियों के साथ चर्चा कर लेती थी। बतौर शिक्षक किसी अवधारणा को अपने ज्ञान व खास शिक्षण पद्धति का उपयोग करते हुए सिखाने का अवसर हमारे पास था। हम इसके लिए बाध्य नहीं थे कि एक ही तरह की कहानियां चुनें, एक ही तरह के सवाल पूछें और अपने छात्रों से एक ही तरह के जवाबों की उम्मीद करें।

## नियंत्रण का नुकसान

बनी-बनाई सामग्री का उपयोग शुरू करने से शिक्षण की प्रक्रिया पर बहुत ज्यादा नियंत्रण हो जाता है तथा लगातार ध्यान मानव ''संसाधन'' (छात्र और शिक्षकों) के निपुण प्रबंधन पर रहने लगता है और विचार के लिए दरअसल कोई गुंजाइश नहीं बच पाती। ''प्रभावशीलता और निपुणता'' के इस विमर्श व बनी-बनाई सामग्री की असल समस्या यह है कि इन्हें शिक्षकों के ''सशक्तीकरण'' के साधन के तौर पर पेश किया जा रहा है। शिक्षकों के मन में बिठाया जा रहा है कि यह पद्धति उनके शिक्षण को आसान बना देगी तथा योजना बनाने व पाठ्यचर्या का शिक्षण करने जैसे ''नीरस'' कामों से पीछा छुड़ा कर उनके काम के बोझ को कम कर देगी।

हकीकत यह है कि ज्यादातर शिक्षकों को यह बनी-बनाई सामग्री जड़ लगती है क्योंकि कक्षा व छात्रों की अलग-अलग जरूरतों के हिसाब से इसे उपयोग में लेना उनके लिए संभव नहीं होता। इससे पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों पर शिक्षकों की सत्ता व अधिकार भी न्यूनतम रह जाते हैं। बतौर शिक्षक इन सुधारों को स्थापित करने की उम्मीदों को पूरा करने के चलते मैंने शिक्षण संबंधी मामलों में अधिकारों की अनुपस्थिति की वजह से अपने-आपको फंसा हुआ महसूस किया है। बनी-बनाई सामग्री को शिक्षक की ''मदद'' के नाम पर शुरू किया गया था और अब यह उनकी शिक्षण पद्धति को नियंत्रित करती है। गहराई से देखने पर पता चलता है कि यह ''सुधार'' रूपी उपाय शिक्षक की छात्रों के विकास व सीखने के लिहाज से उचित सामग्री बनाने व चुनने की काबिलियत पर गहरे संदेह को प्रकट करते हैं।

यह तर्क दिया जा सकता है कि शिक्षकों का काम उनके अपने-अपने संस्थानों के प्रशासन द्वारा किए गए प्रावधानों के अंतर्गत अब ज्यादा नियंत्रित व व्यवस्थित हो गया है। शिक्षकों के साथ अनौपचारिक बातचीत करने पर पता चलता है कि वे एक उलझन की स्थिति में हैं खासकर सतत व व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) शुरू हो जाने की वजह से। शिक्षकों को अपने पेशेवर अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए अपने किए काम के सबूत देने पड़ते हैं। शिक्षण बताई गई योजना के मुताबित ही हो रहा है यह सुनिश्चित करने के लिए हर स्तर पर विषय समन्वयक, कक्षा समन्वयक व प्राइमरी हैड जैसे नए पद बनाए जाते हैं। शिक्षकों के लिए शिक्षण करने का पूरा मकसद यह बन गया है कि वे सप्ताह के लिए दी गई योजना को पूरा करें और उन्हें मिले काम को सफलतापूर्वक पूरा करने के सबूत दें। शिक्षण का ज्यादतर समय उन रिपोर्टों को बनाने में चला जाता है जिन्हें विभिन्न ''समन्वयकों'' को देना होता है। योजनाबद्ध काम को पूरा ना कर पाने या उसे करने में हुई देरी आपसे ''उचित'' कारण बताने की मांग करती है और इसकी वजह से सवाल

खड़े हो जाते हैं। शिक्षक के काम के हर पहलू को इस तरह जांच के दायरे में ले आना शिक्षण को कष्टप्रद बना देता है। जबकि शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कक्षाई मामलों के संबंध में शिक्षक के पास पर्याप्त शक्ति या सत्ता होनी चाहिए। शिक्षकों की स्वायत्तता को एक जरूरी तत्व के तौर पर देखा जाना चाहिए ताकि शिक्षक अपने काम को लेकर संतुष्ट व जिम्मेदार महसूस करें। पर्याप्त स्वतंत्रता व लचीलापन सीखने के नए रास्तों को खोलते हैं तथा शिक्षण को एक मानवीय प्रयास में तब्दील कर देते हैं।

बनी-बनाई सामग्री के प्रचार व इसके आक्रामक बाजारीकरण ने शिक्षक बनने के लिए पेशेवर योग्यता की जरूरत को महत्वहीन बना दिया है। इस प्रकार कई कारक एक साथ शिक्षक के खिलाफ काम करते हुए दिख हरे हैं, ऐसा खासतौर पर इसलिए भी है कि स्कूली शिक्षा में अपने वजूद को हासिल करने के लिए शिक्षक एक साथ संगठित होते शायद ही कभी दिखाई देते हैं।

## निष्कर्ष

यह तर्क दिया जा सकता है कि शिक्षक छात्रों के सीखने को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक होते हैं। जो हमारी जिन्दगी को छूता है और हमारे मन पर एक अमिट छाप छोड़ता है वह आमतौर पर शिक्षक का मानवीय पक्ष ही होता है। समर्पित, प्यार करने वाले, ज्ञानी व चिंतनशील शिक्षक छात्रों में आलोचनात्मक व रचनात्मक सोच को विकसित कर सकते हैं। शिक्षक जिस तरह से छात्र की जिज्ञासा को बढ़ाता है और शिक्षण प्रक्रिया को जीवंत बनाए रखता है उसका विकल्प सामग्री, पाठ्यचर्या जैसे कोई भी दूसरे घटक नहीं हो सकते। शिक्षक किसी पाठ की विषयवस्तु का ही चयन नहीं करते बल्कि इसकी योजना वह इस तरह बनाते हैं कि छात्रों के अलग-अलग स्तरों, रुचियों व जरूरतों को पूरा किया जा सके। वह अपनी योग्यता व अनुभव के जरिए हर बच्चे को सिखाने में उपयुक्ता व संतुलन को साधते हैं। छात्रों की विभिन्न जरूरतों को ध्यान में रखते हुए वे ऐसा वातावरण रचते हैं जिससे सीखने में मदद मिलती है और साथ ही चुनौती भी। यही वह वजह है जिसके कारण शिक्षण मानवीय प्रयास बनता है। विषयवस्तु का निर्णय व चयन करने की काबिलियत शिक्षक का मूल अधिकार है और उससे इसे छीनने से शिक्षण की आत्मा मर जाएगी। पाठ्यचर्या व विषयवस्तु जैसे दूसरे घटकों पर ध्यान देने की बजाए छात्रों की उपलब्धि को शिक्षक के प्रयास के उत्पाद के तौर पर देखना महत्वपूर्ण है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रसार करने के लिए शिक्षकों को एक ऐसी सक्रिय एजेंसी के तौर पर देखे जाने की जरूरत है जो छात्रों के बारे में सोच सकते हैं व निर्णय ले सकते हैं तथा छात्रों की विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक व सांस्कृतिक स्थितियों को ध्यान में रख सकते हैं। शिक्षकों की सत्ता को नियंत्रित करने की बजाए उनके सशक्तिकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि वे बहु-सांस्कृतिक कक्षाओं की चुनौतियों का सामना करने के बेहतर रास्ते तलाश सकें और इसे हासिल करने के लिए शिक्षकों की पेशेवराना जरूरत पर गंभीर पुनर्विचार किए जाने की जरूरत है। ◆

**लेखिका परिचय :** लेखिका दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग (सीआईई) में शोध छात्र हैं।

(यह लेख 'इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली' से सभार)

**भाषान्तर : प्रमोद**

## संदर्भ

Batra, Poonam (2012): "Positioning Teachers in the Emerging Education Landscape of Contemporary India," *India Infrastructure Report*, IDFC Foundation, New Delhi: Routledge, pp 219-231, accessed on 18 August 2015,http://www.teindia.nic.in/e9-tm/Files/Posting_TEELCI.pdf.

Kumar, Krishna (2011): "Teaching and the Neo-Liberal State," *Economic and Political Weekly*, Vol 46 No 21, pp 37–40, accessed on 18 August 2015, http://www.epw.in/perspectives/teaching-and-neo-liberal-state.html.